हियावाथा का गीत

हेनरी वैड्सवर्थ लॉन्गफेलो

चित्र : सूसन जेफ़्फ़र्स

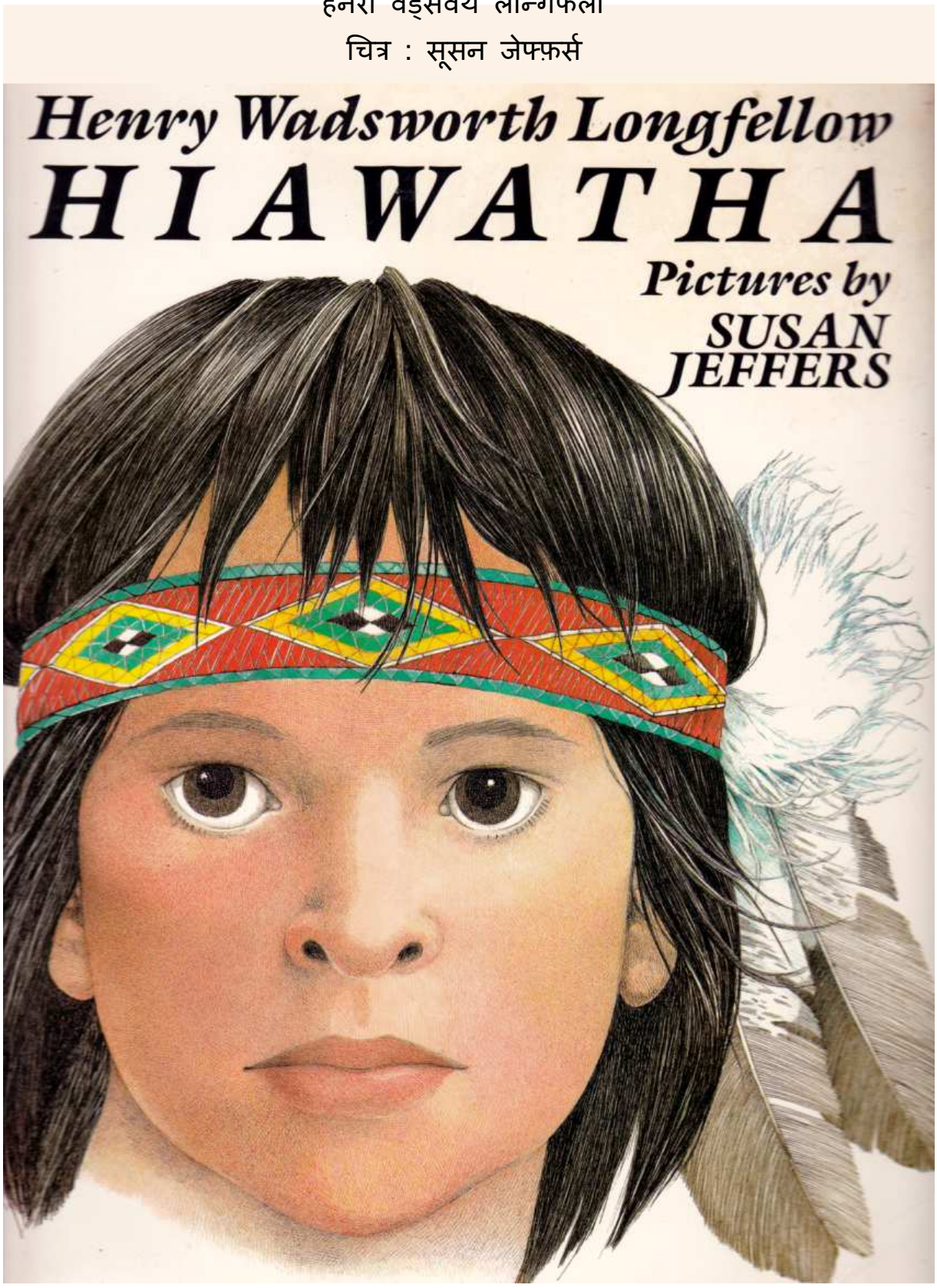

हियावाथा का गीत

हेनरी वैड्सवर्थ लॉन्गफेलो

चित्र : सूसन जेफ्फ़र्स

हिंदी : विदूषक

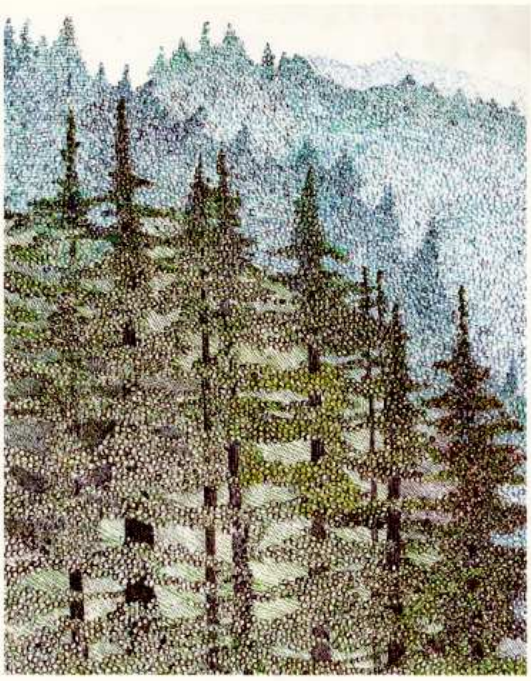

Henry Wadsworth Longfellow

HIAWATHA

Pictures by SUSAN JEFFERS

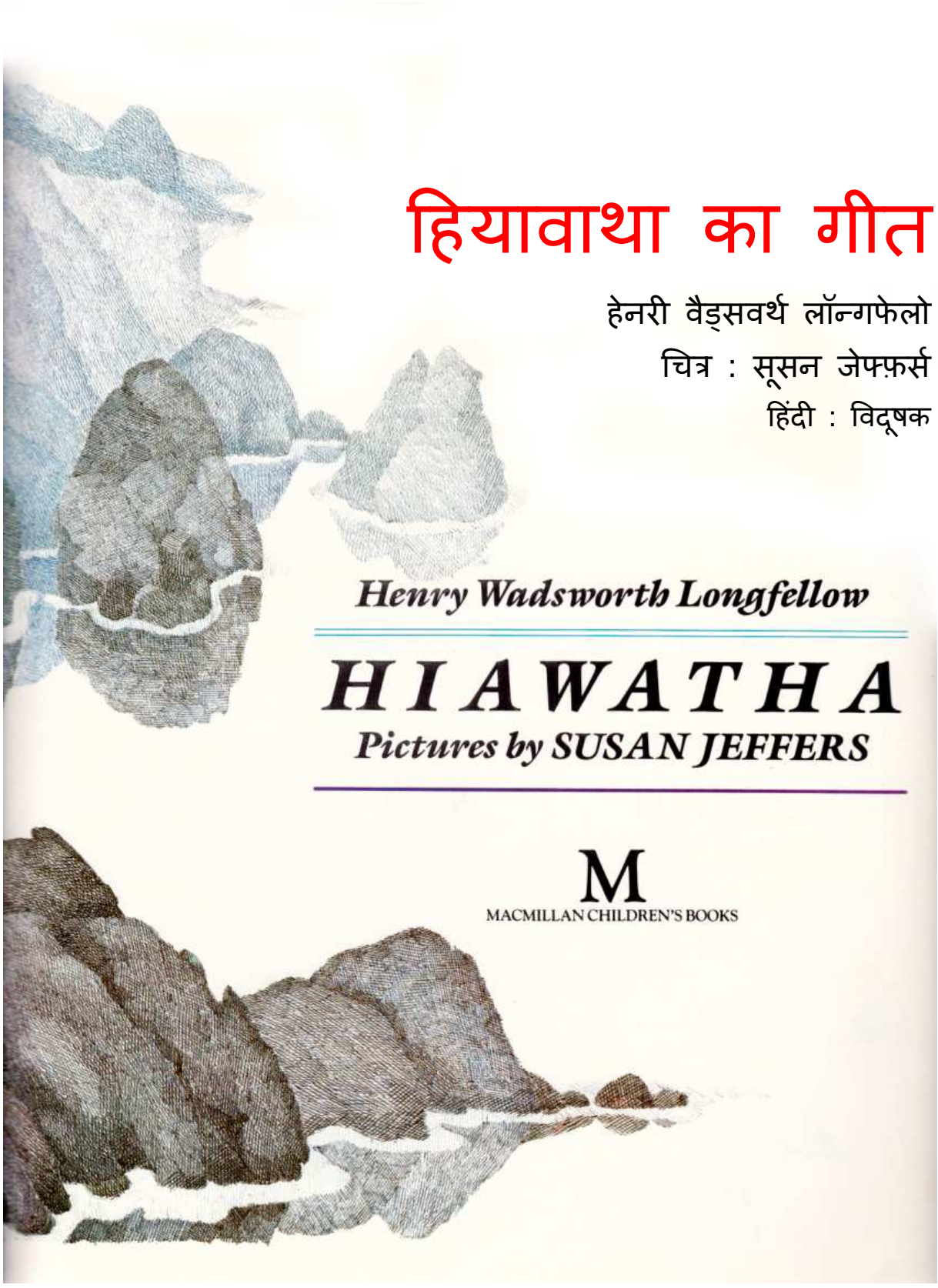

हियावाथा का गीत

हेनरी वैड्सवर्थ लॉन्गफेलो

चित्र : सूसन जेफ़र्स

हिंदी : विदूषक

Henry Wadsworth Longfellow

HIAWATHA

Pictures by SUSAN JEFFERS

M
MACMILLAN CHILDREN'S BOOKS

अमरीका के मूल निवासियों - यानि "नेटिव अमेरिकंस" में हेनरी वैड्सवर्थ लॉन्गफेलो की गहरी रूचि थी. उनकी मशहूर कविता *"द सांग ऑफ़ हियावाथा"* 10 नवम्बर 1855 को पहली बार प्रकाशित हुई. लॉन्गफेलो अपने समय में कई अमरीकी आदिवासी सरगनाओं को व्यक्तिगत तौर पर जानते थे. प्रसिद्ध अमरीकी विद्वान् हेनरी रो स्कूलक्राफ्ट के आदिवासियों पर किए काम से लॉन्गफेलो परिचित थे. स्कूलक्राफ्ट ने मूल अमरीकी आदिवासियों के साथ सालों बिताये थे. आदिवासी जीवनशैली पर उन्होंने बहुत संवेदना से लिखा और उसे चित्रित किया था. 25 जून 1854 को लॉन्गफेलो ने अपनी डायरी में लिखा,

"मैंने अमरीका के मूल आदिवासियों के जीवन पर एक लम्बी कविता लिखने का मन बनाया है. बस यही काम मैं कुछ कुशलता से कर सकता हूँ. मैं इस कविता में उनकी सुन्दर परम्पराओं को पिरोना चाहता हूँ."

"हियावाथा" का पात्र स्कूलक्राफ्ट और अन्य लेखकों के शोधकार्य से जन्मा. दरअसल "हियावाथा" नाम का एक असली इंसान भी था. वो ओनोनदगा कबीले का सरगना था, और इरोकआइस देश के निर्माण में उसके अहम् भूमिका निभाई थी.

लॉन्गफेलो की कविता जब छपी तो वो एक मील का पत्थर साबित हुई. उस जैसी कविता पहले कभी नहीं छपी थी. मूल अमरीकी आदिवासियों के रिवाजों, परम्पराओं, मिथकों, किवदंतियों और अन्य लोगों द्वारा लिखे वर्णनों को, लॉन्गफेलो ने एक कवि की संवेदनायों के साथ लिखा. इससे यह कविता एक सदाबहार और अमर कविता बनी.

बचपन में मुझे पहली बार *"द सांग ऑफ़ हियावाथा"* पढने का मौका मिला. मेरी माँ इस कविता की हमेशा से बड़ी मुरीद थीं. वो अक्सर *"हियावाथा"* के बचपन का वृतांत मुझे पढ़कर सुनाती थीं, *"गित्चे गुमी नदी के तट के पास ...."* उन्हें सुनने के बाद मैं कल्पनालोक में खो जाती थी. कभी-कभी मैं घर के पीछे जंगल में निकल जाती थी, जहाँ मैं खुद को एक आदिवासी इंडियन मानकर आसपास की चिड़ियों से बातचीत करती और तेज़ बहती हवा की आवाज़ को सुनती.

दो साल पहले मुझे इस कविता को दुबारा पढने का मौका मिला. इस बार पढने के तुरंत बाद मैने अपने बचपन की चहेती कविता के चित्र बनाने का निश्चय किया. चित्र बनाने से पहले मैंने कविता को लेकर बहुत शोध किया और तरह-तरह की जानकारी इकट्ठी की. मैंने न्यूयॉर्क शहर में स्थित अमेरिकन इंडियन म्यूजियम के तमाम चक्कर लगाए और मूल अमरीकी लोगों की वेशभूषा, गहनों आदि के बहुत से फोटो लिए. फिर मैंने स्कूलक्राफ्ट और अन्य विद्वानों के लेखों को पढ़ा, एडवर्ड कर्टिस के सुन्दर फोटोग्राफ्स का अध्धयन किया. इस सबके के साथ मैंने *"द सांग ऑफ़ हियावाथा"* को दुबारा बार-बार पढ़ा.

वैसे यहाँ मेरे चित्रों का फोकस *"हियावाथा"* का बचपना है, पर साथ में मैं इस महान रचना की सम्पूर्ण झलकी भी देना चाहती थी. इसका मैंने भरपूर प्रयास किया है. पहले चित्र में नोकोमिस है - वो चन्द्रमा की बेटी है. क्यूंकि एक विरोधी "अंगूर की बेल" से बने और आसमान से लटके उसके झूले को काट देता है, इस वजह से नोकोमिस पृथ्वी पर आकर गिरती है. उसके बाद के चित्र में नोकोमिस अपनी लड़की - वेनोहा को जन्म देती है. नोकोमिस खुद मृत्यु की कगार पर है क्यूंकि पश्चिमी-हवा ने उसे त्याग दिया है. वेनोहा का एक बेटा है - हियावाथा. अगले कुछ चित्रों में नोकोमिस की आत्मा हियावाथा पर नज़र रखती है. अंतिम चित्र में हियावाथा जवान हो चुका है और अब उसे नोकोमिस का दोस्त इयागू, हाथ में तीर-कमान थमाता है.

जब मैं इस कविता के चित्रों को निहारती हूँ तो मेरे ज़हन में बचपन की तमाम यादें तरोताजा हो जाती हैं. अपने चित्रों में मैंने उन यादों को संजोने की कोशिश की है.

- सूसन जेफ्फ़र्स

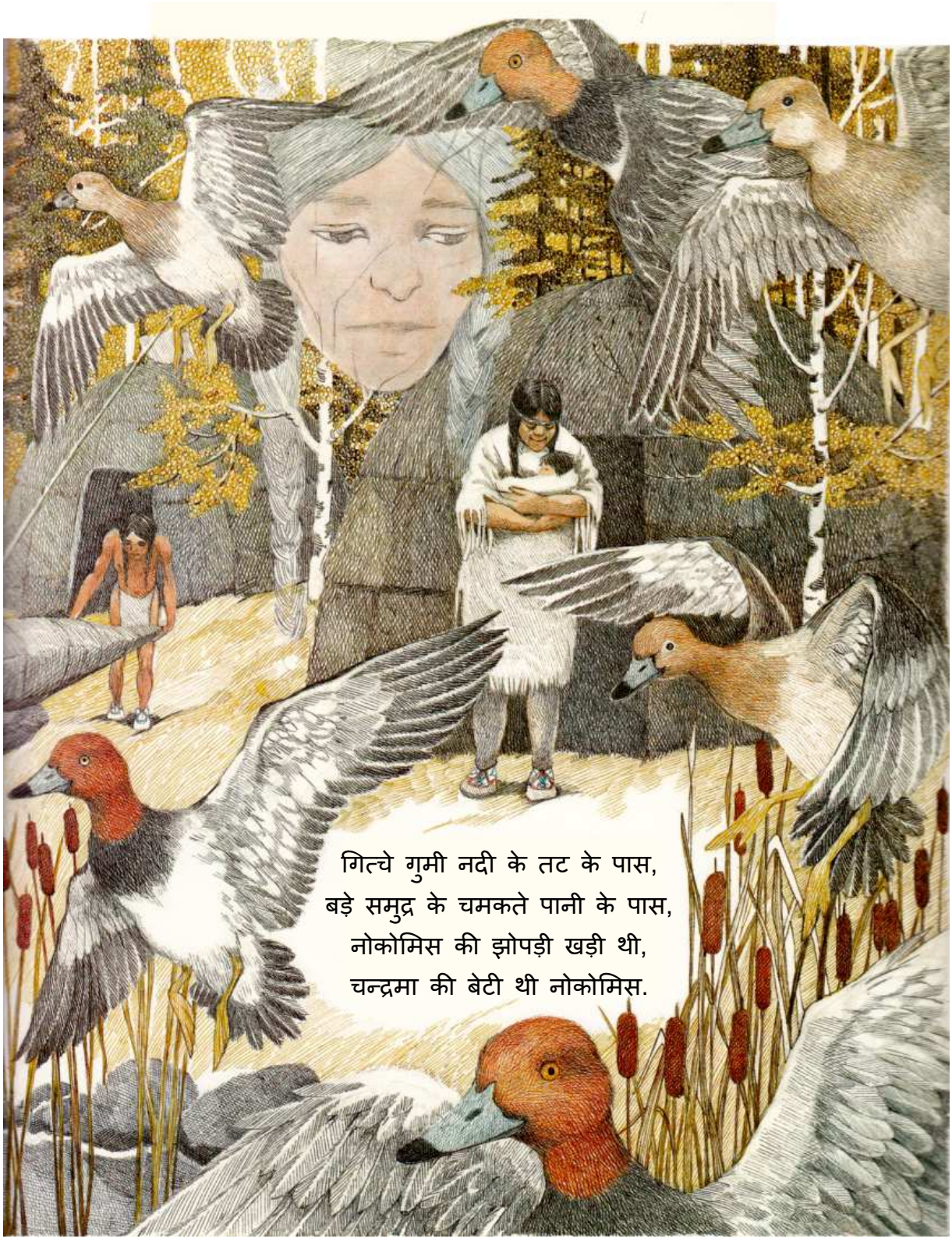
गित्चे गुमी नदी के तट के पास,
बड़े समुद्र के चमकते पानी के पास,
नोकोमिस की झोपड़ी खड़ी थी,
चन्द्रमा की बेटी थी नोकोमिस.

उसके पीछे था अँधेरा जंगल
जहाँ खड़े थे चीड़ के ऊंचे, उदास पेड़,
वहां खड़े थे शंकु के फलवाले, देवदार के पेड़,
सामने था स्वच्छ निर्मल पानी,
सूरज की धूप में चमचमाता,
बड़े समुद्र का पानी चमकता था.

वहां बूढ़ी, झुर्रियों वाली नोकोमिस
नन्हें हियावाथा का लालन-पालन करती थी.
पेड़ों की टहनियों से बने पालने में उसे झोंके देती,
पालने पर मुलायम घास और काई का गद्दा बिछाती
फिर उन्हें बारहसिंघे की तांत से सिलती.
जब बच्चा रोता तो वो उसे पुचकारती और कहती,
“चुप कर, नहीं तो नंगा भालू तेरा रोना सुन लेगा!”
फिर उसे लोरी गा-गाकर सुला देती.
“मेरा प्यारा, छोटा उल्लू!
कौन है वो जो झोपड़ी को रोशन करता है?
किसकी आँखें झोपड़ी में प्रकाश लाती हैं?
मेरा प्यारा, छोटा उल्लू!”

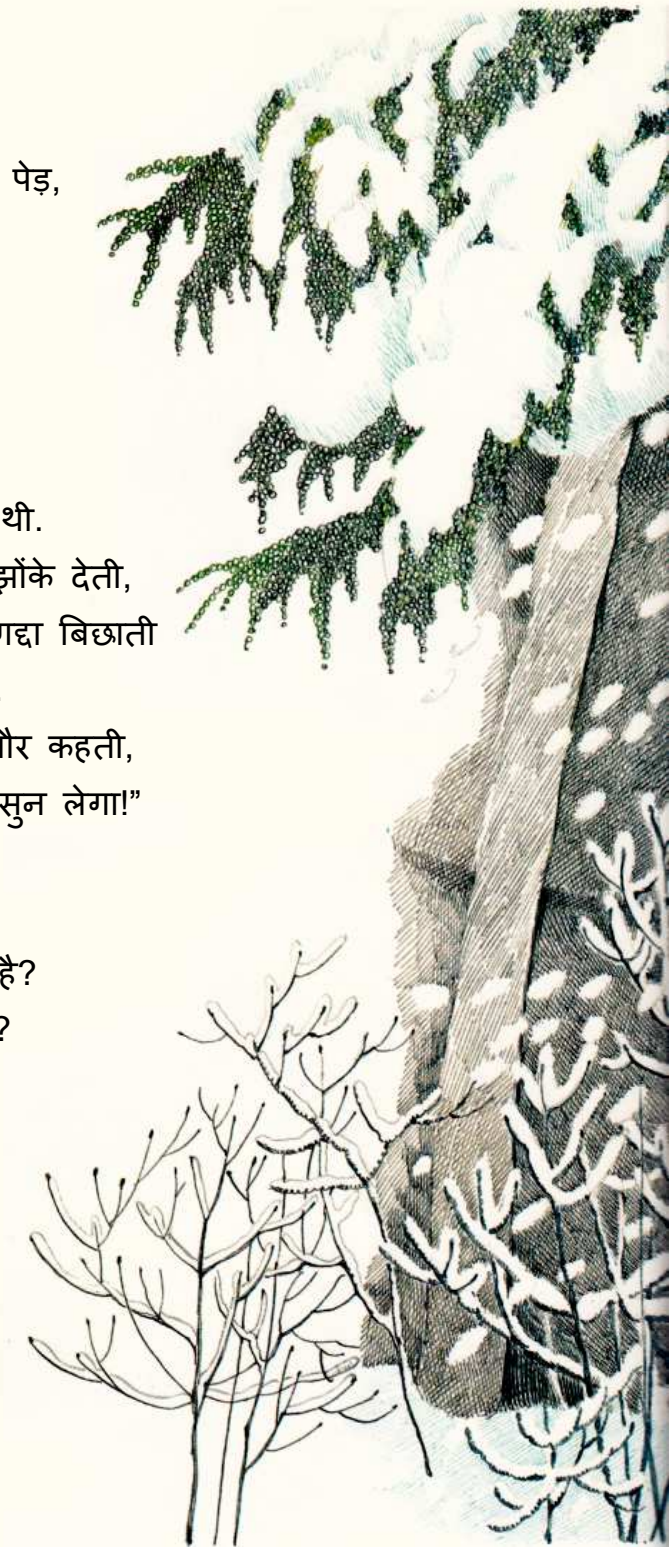

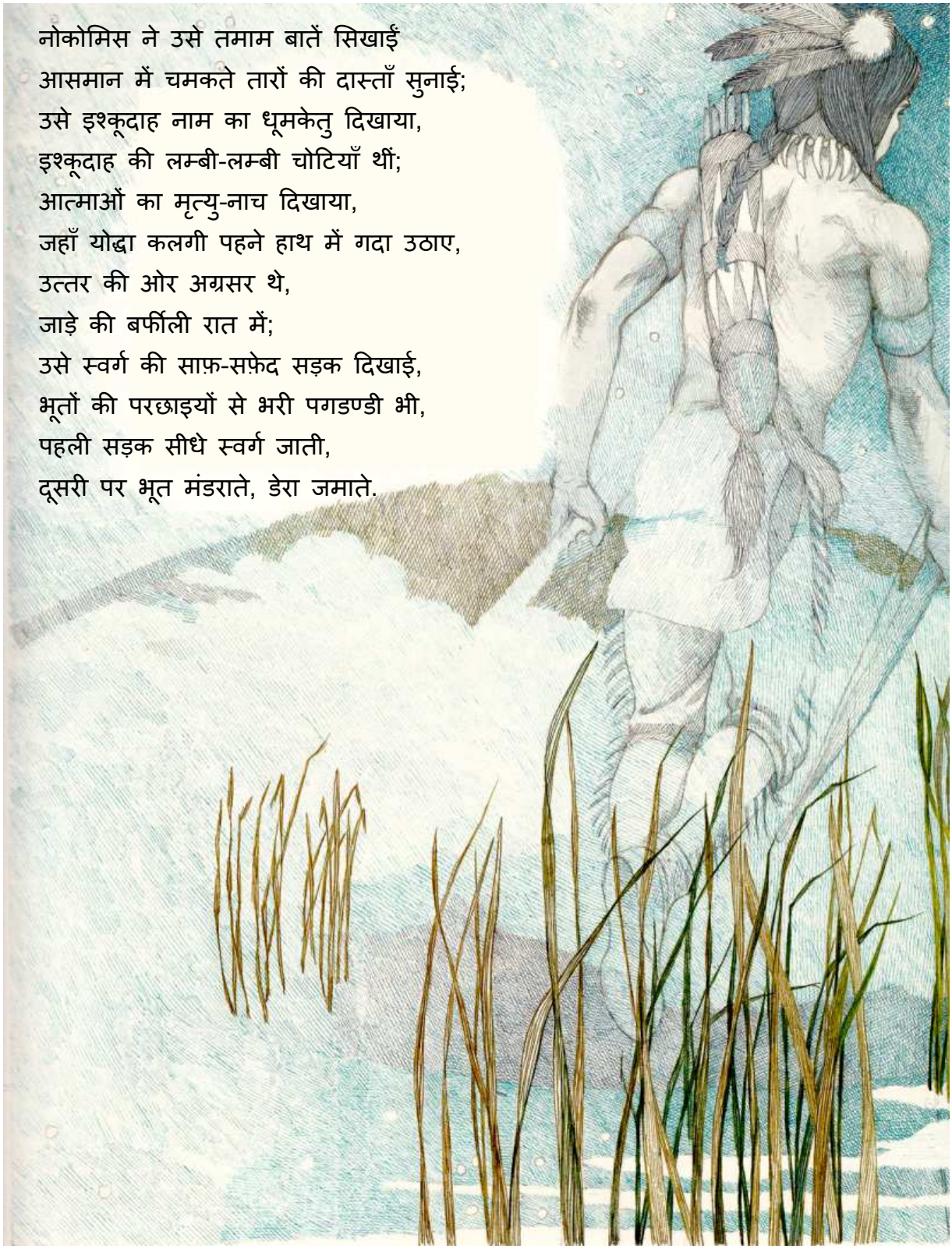

नोकोमिस ने उसे तमाम बातें सिखाईं
आसमान में चमकते तारों की दास्ताँ सुनाई;
उसे इश्कूदाह नाम का धूमकेतु दिखाया,
इश्कूदाह की लम्बी-लम्बी चोटियाँ थीं;
आत्माओं का मृत्यु-नाच दिखाया,
जहाँ योद्धा कलगी पहने हाथ में गदा उठाए,
उत्तर की ओर अग्रसर थे,
जाड़े की बर्फीली रात में;
उसे स्वर्ग की साफ़-सफ़ेद सड़क दिखाई,
भूतों की परछाइयों से भरी पगडण्डी भी,
पहली सड़क सीधे स्वर्ग जाती,
दूसरी पर भूत मंडराते, डेरा जमाते.

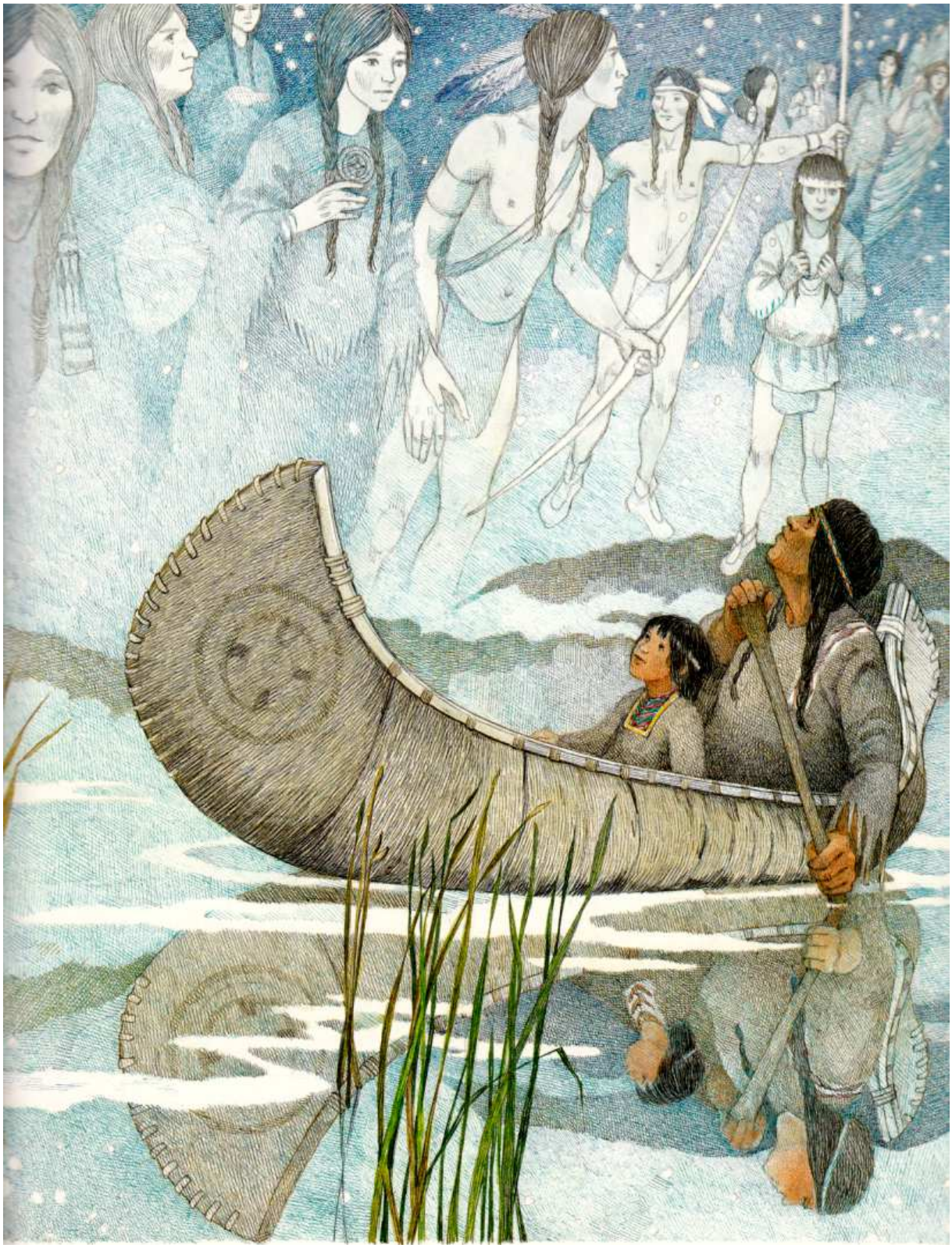

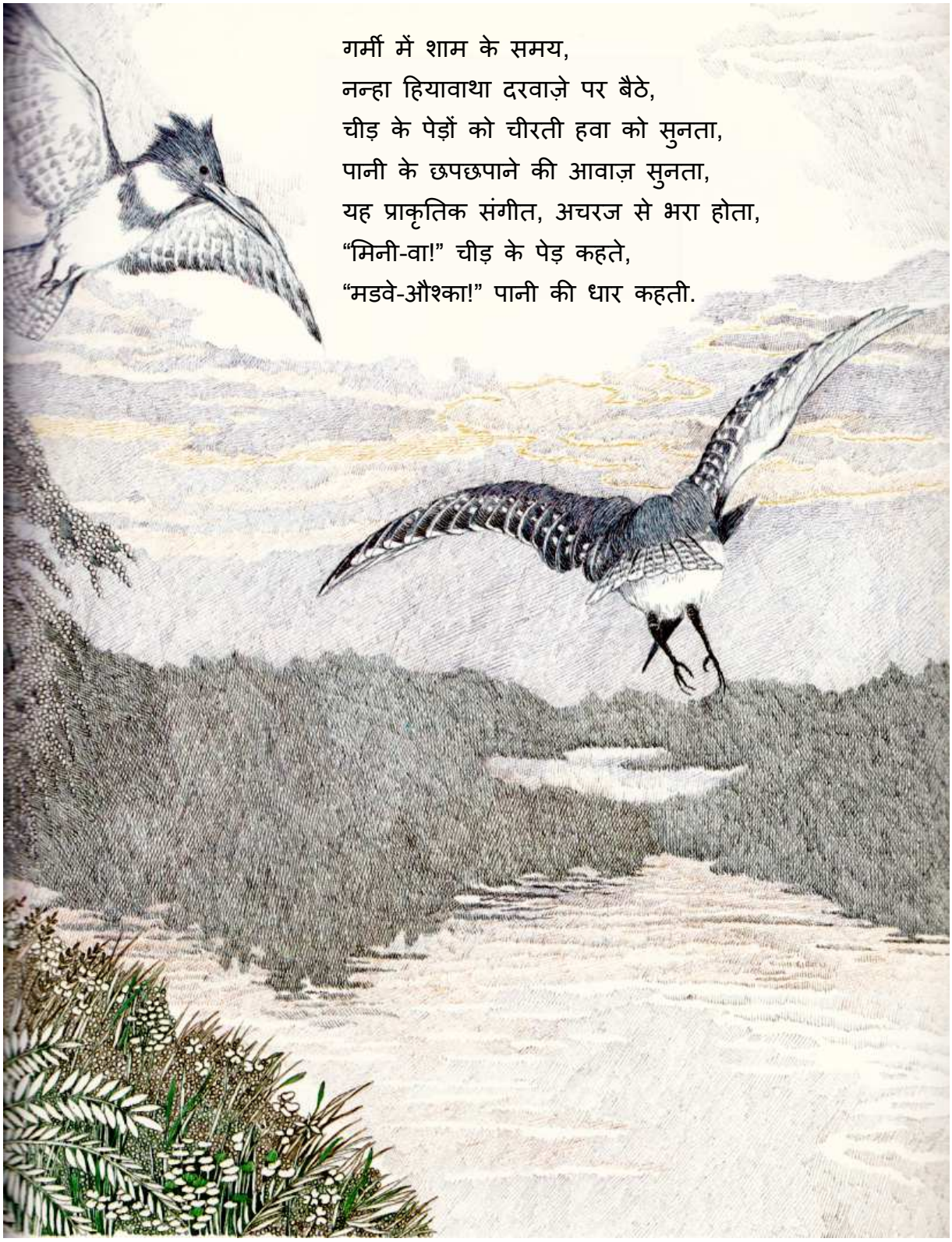

गर्मी में शाम के समय,
नन्हा हियावाथा दरवाज़े पर बैठे,
चीड़ के पेड़ों को चीरती हवा को सुनता,
पानी के छपछपाने की आवाज़ सुनता,
यह प्राकृतिक संगीत, अचरज से भरा होता,
“मिनी-वा!” चीड़ के पेड़ कहते,
“मडवे-औश्का!” पानी की धार कहती.

शाम के धुंधले में वो,
जुगनुओं को टिमटिमाते देखता.
वो अपने धीमी-मंद प्रकाश से,
झाड़ियों और पेड़ों को रोशन करते.
फिर वो नोकोमिस का सिखाया गीत गाता:
“वाह-रे-वाह छोटे जुगनू
छोटे, मंडराते, पूँछ में आग लिए जुगनू,
नाचते, इठलाते, सफ़ेद आग के जीव,
मुझे भी अपनी मोमबत्ती से जलाओ,
फिर मैं अपने पालने में लेट जाऊंगा,
और नींद आने पर पलकें बंद करूंगा!”

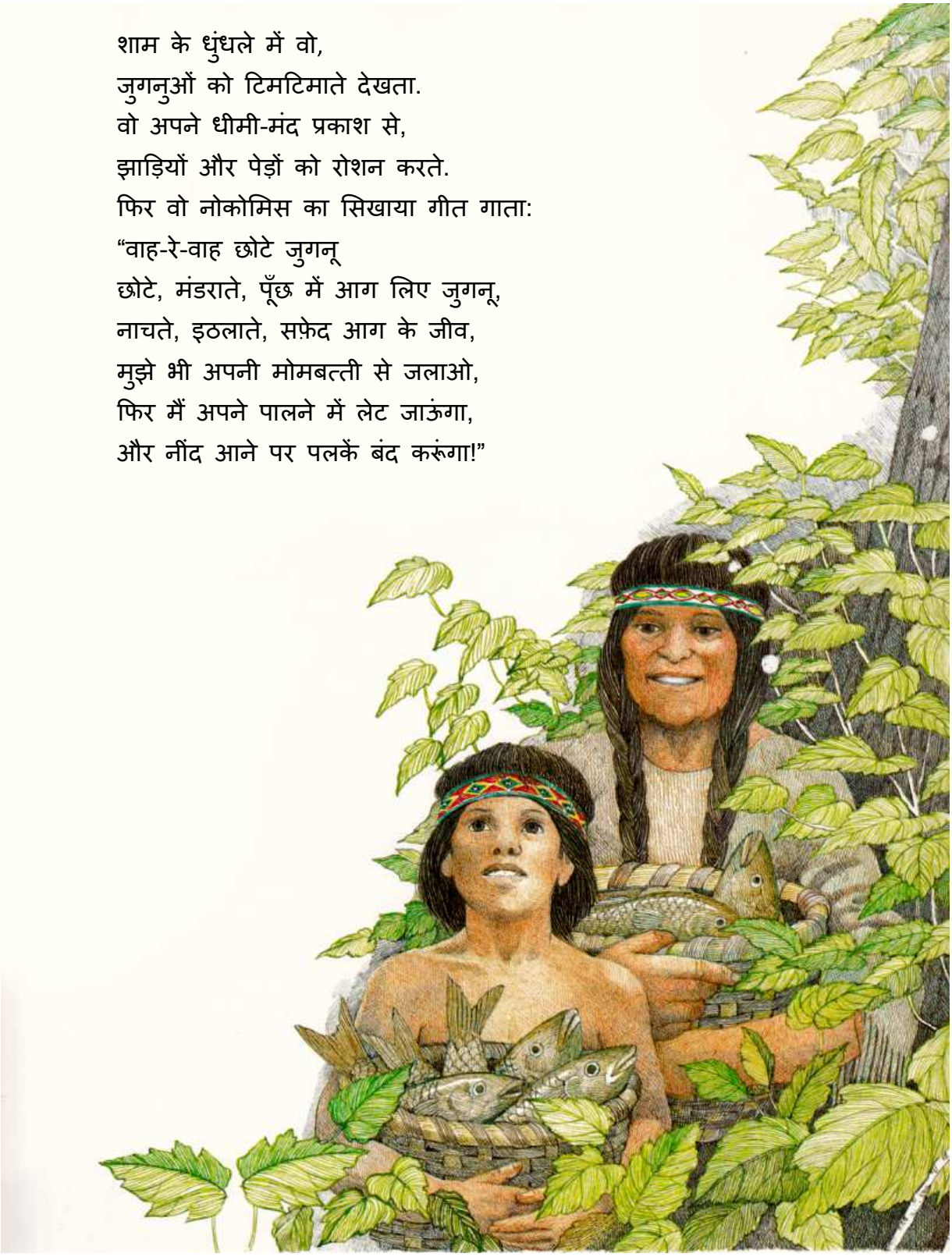

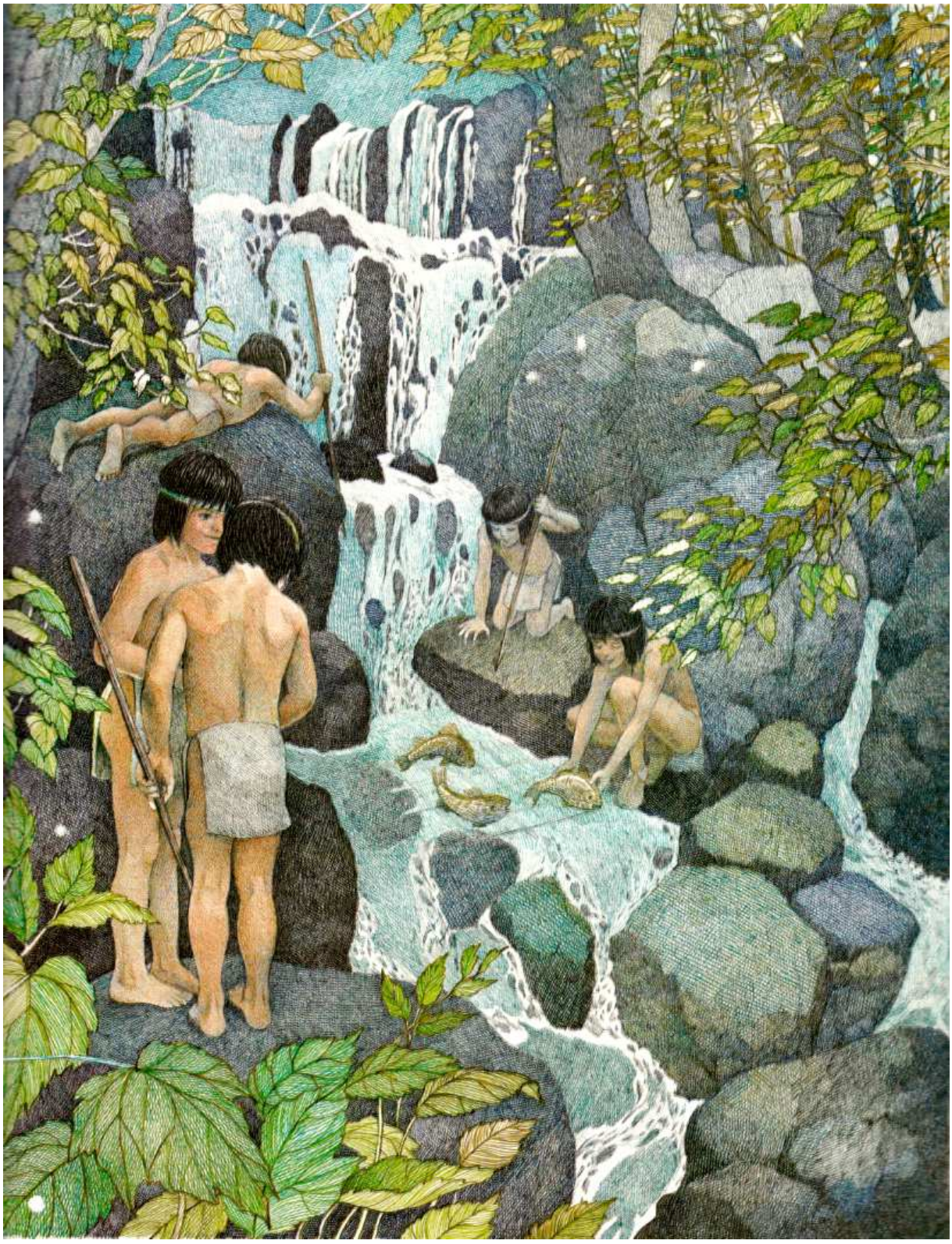

वो पानी में उगते चन्द्रमा को निहारता,
चाँद पानी में थिरकता,
वो थिरकते पानी के नृत्य को देखता,
फिर हियावाथा ने हलके से पूछा,
“यह क्या है नोकोमिस?”
और अच्छी नोकोमिस ने बताया:
“एक बार एक योद्धा ने बहुत गुस्से में,
मध्यरात्रि के समय, अपनी दादी को उठाकर
आसमान में चन्द्रमा की तरफ उछाल दिया.
जो तुम देख रहे हो,
वो उसी योद्धा की दादी का शरीर है.”

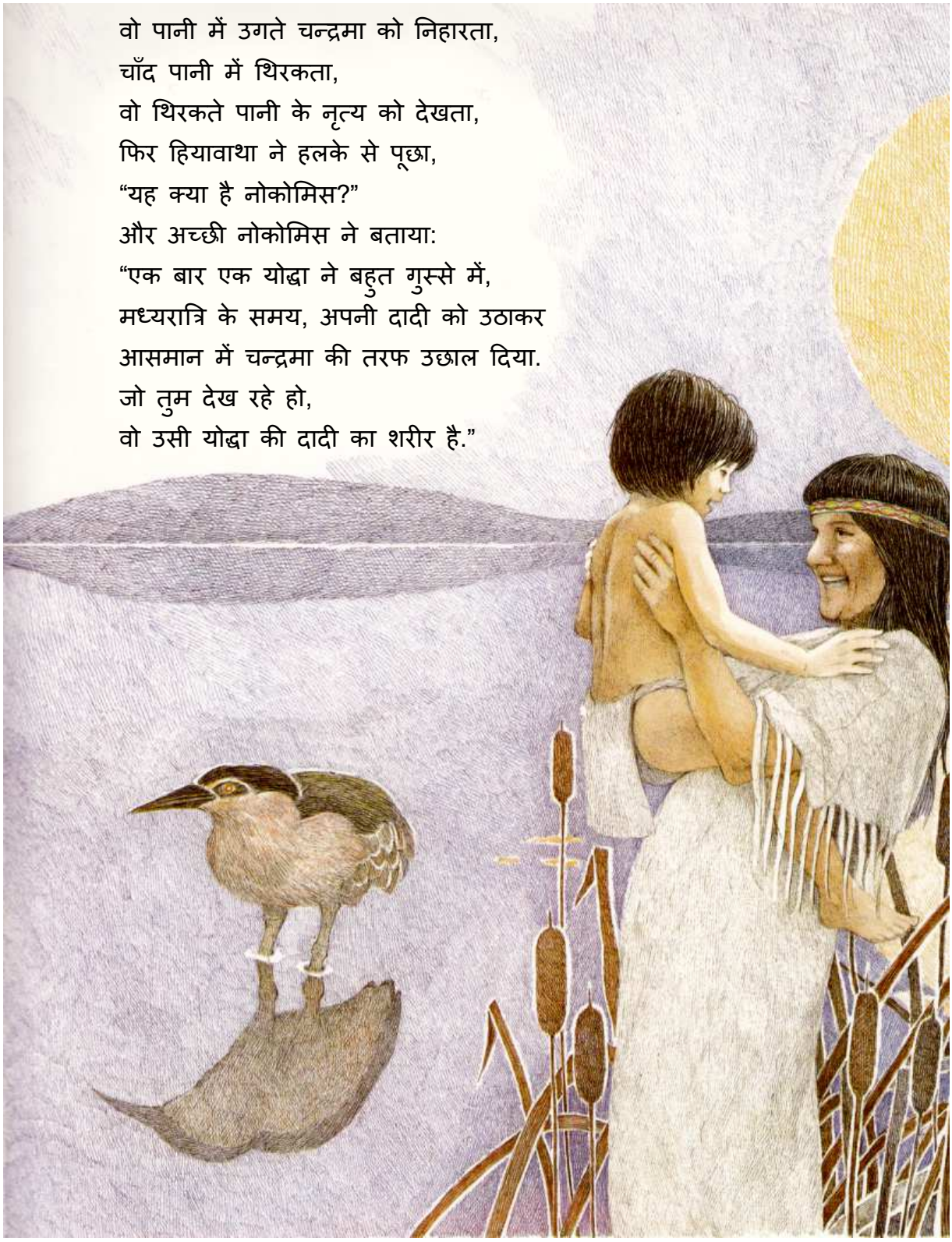

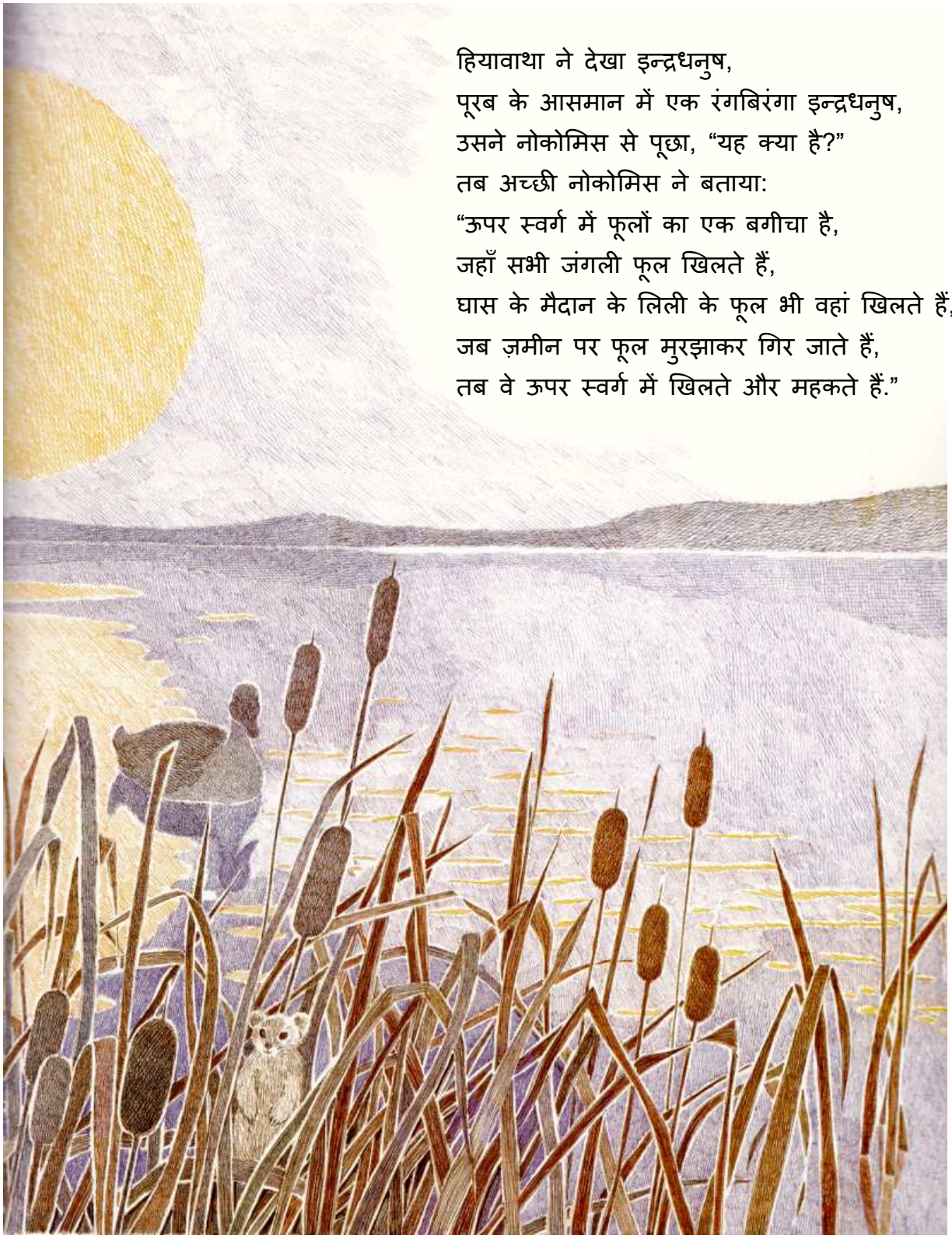

हियावाथा ने देखा इन्द्रधनुष,
पूरब के आसमान में एक रंगबिरंगा इन्द्रधनुष,
उसने नोकोमिस से पूछा, “यह क्या है?”
तब अच्छी नोकोमिस ने बताया:
“ऊपर स्वर्ग में फूलों का एक बगीचा है,
जहाँ सभी जंगली फूल खिलते हैं,
घास के मैदान के लिली के फूल भी वहां खिलते हैं,
जब ज़मीन पर फूल मुरझाकर गिर जाते हैं,
तब वे ऊपर स्वर्ग में खिलते और महकते हैं.”

जब हियावाथा मध्य रात को जंगल में,
उल्लुओं की चीखें और चिल्लाहट सुनता,
तो वो घबराकर पूछता,
“यह क्या आवाजें हैं, नोकोमिस?”
तब अच्छी नोकोमिस उत्तर देती:
“वो उल्लू और उसके बच्चों की आवाज़ है,
वो अपनी ज़ुबां में एक-दूसरे से बतिया रहे हैं,
कभी-कभी एक-दूसरे पर चिल्ला भी रहे हैं.”

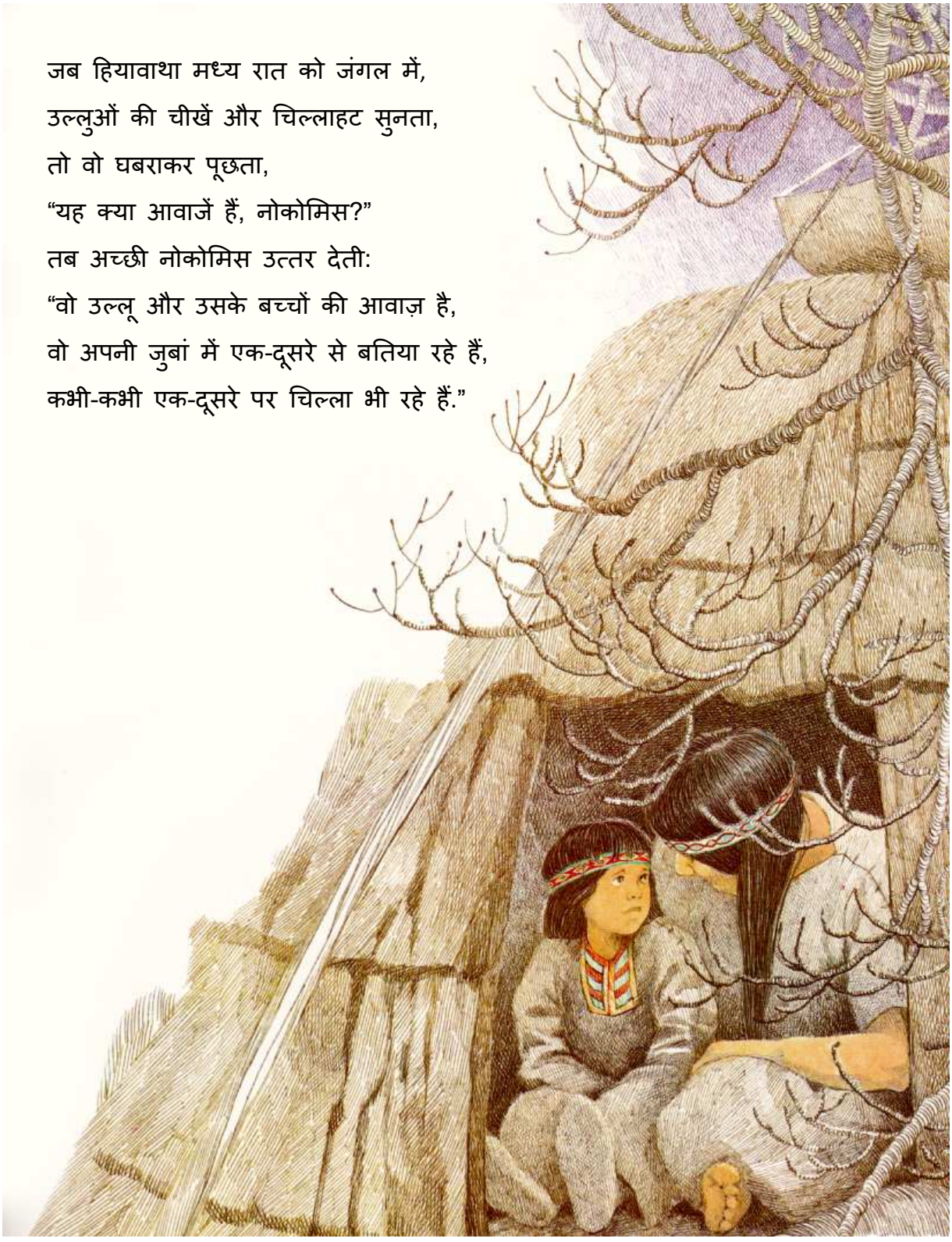

फिर नन्हें हियावाथा ने,
हरेक पक्षी की जुबान सीखी,
उनके नामों, रहस्यों को समझा,
वो गर्मियों में कैसे, अपना घोसला बनाते हैं?
वो सर्दियों में, कहाँ छिपते हैं?
जहाँ भी उसे पक्षी मिलते वो उनसे बातें करता,
वो उन्हें, “हियावाथा की मुर्गियां” बुलाता.

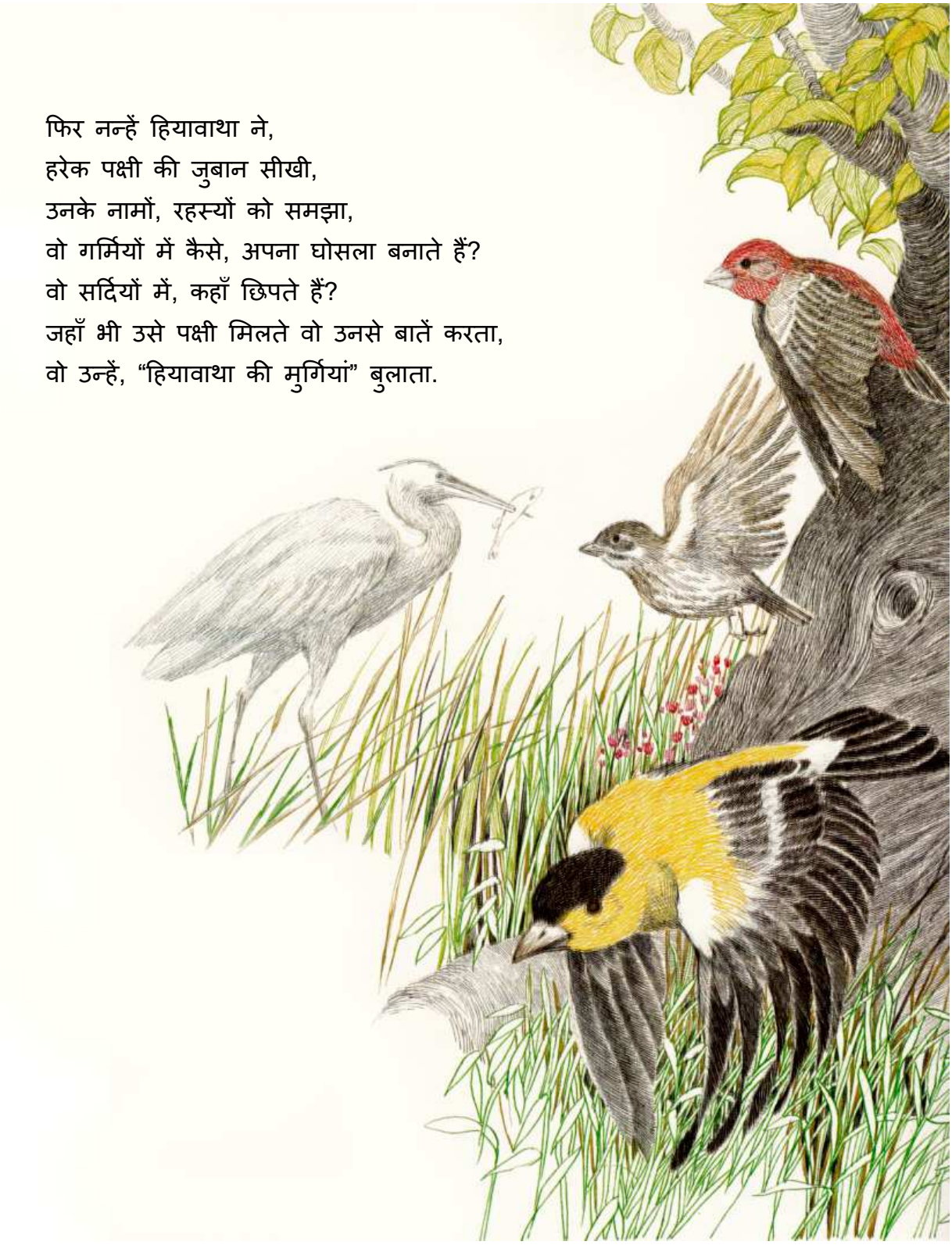

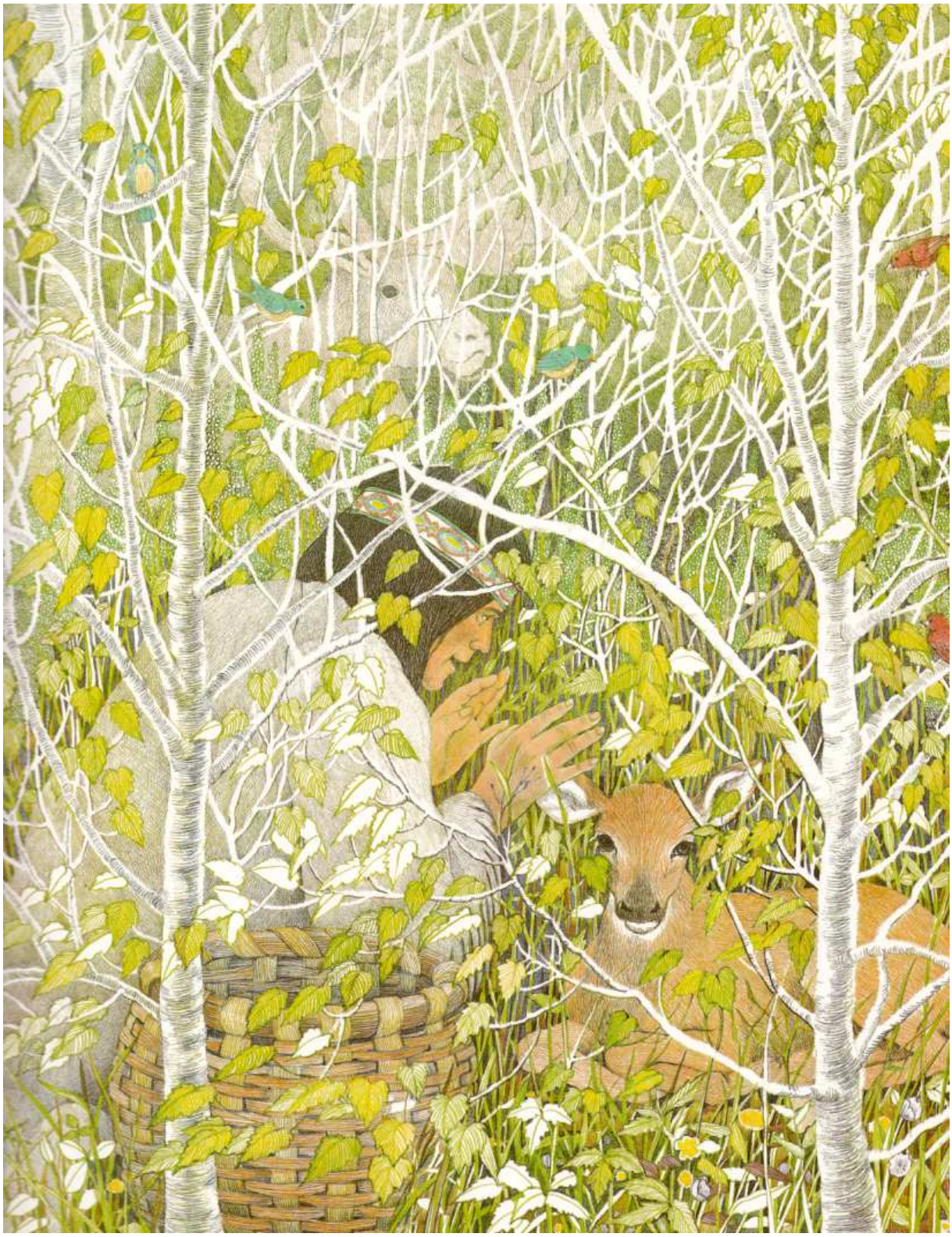

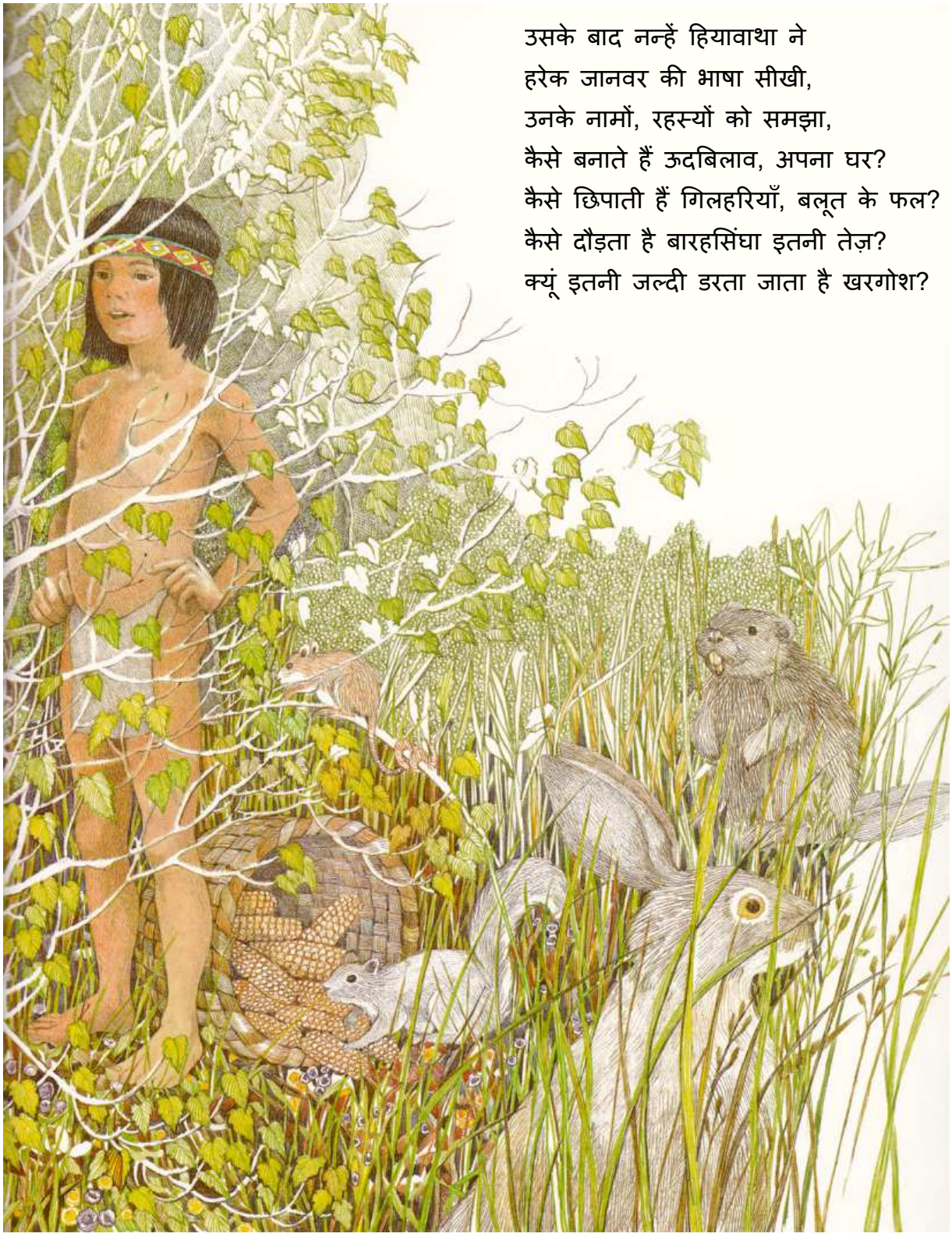

उसके बाद नन्हें हियावाथा ने
हरेक जानवर की भाषा सीखी,
उनके नामों, रहस्यों को समझा,
कैसे बनाते हैं ऊदबिलाव, अपना घर?
कैसे छिपाती हैं गिलहरियाँ, बलूत के फल?
कैसे दौड़ता है बारहसिंघा इतनी तेज़?
क्यूं इतनी जल्दी डरता जाता है खरगोश?

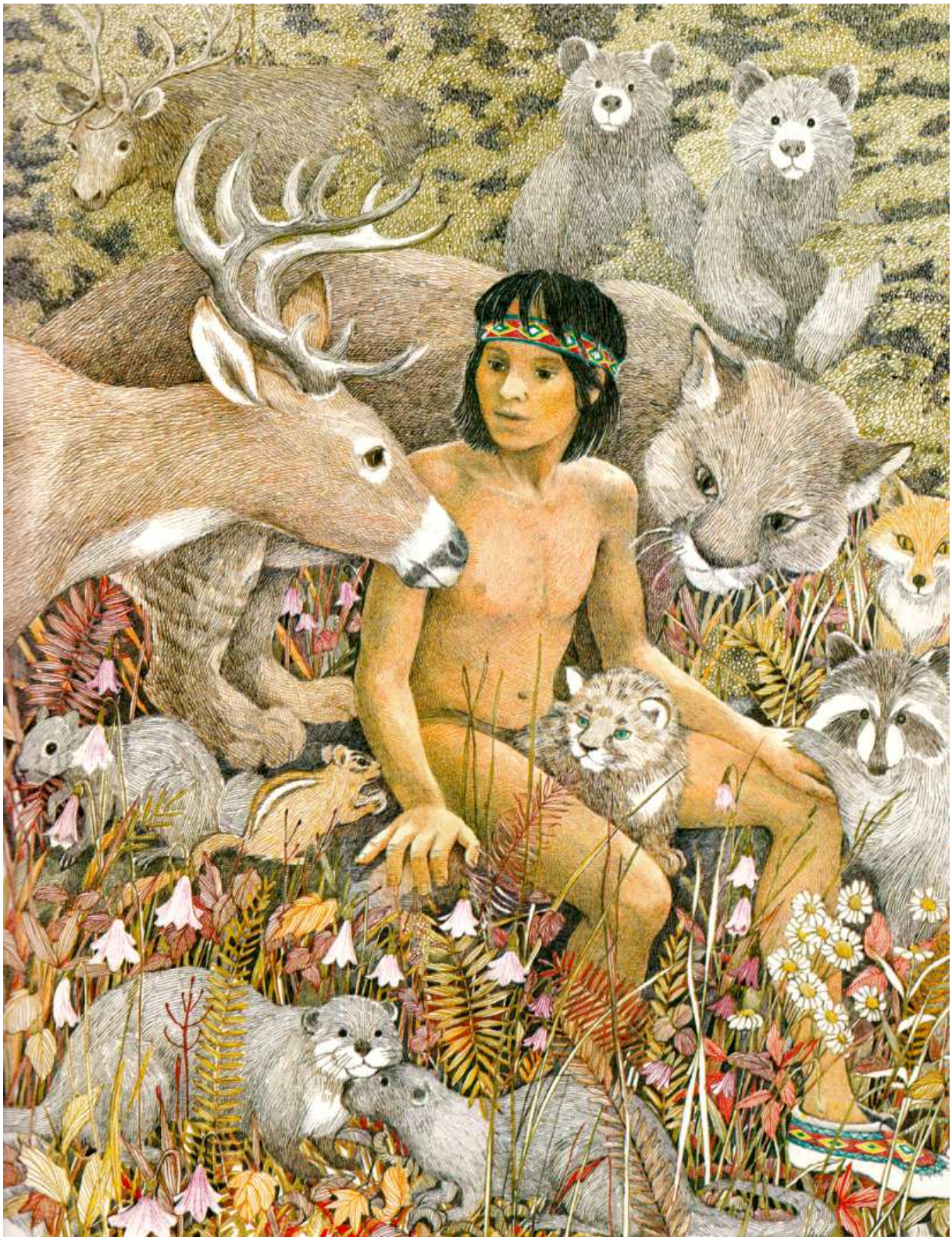

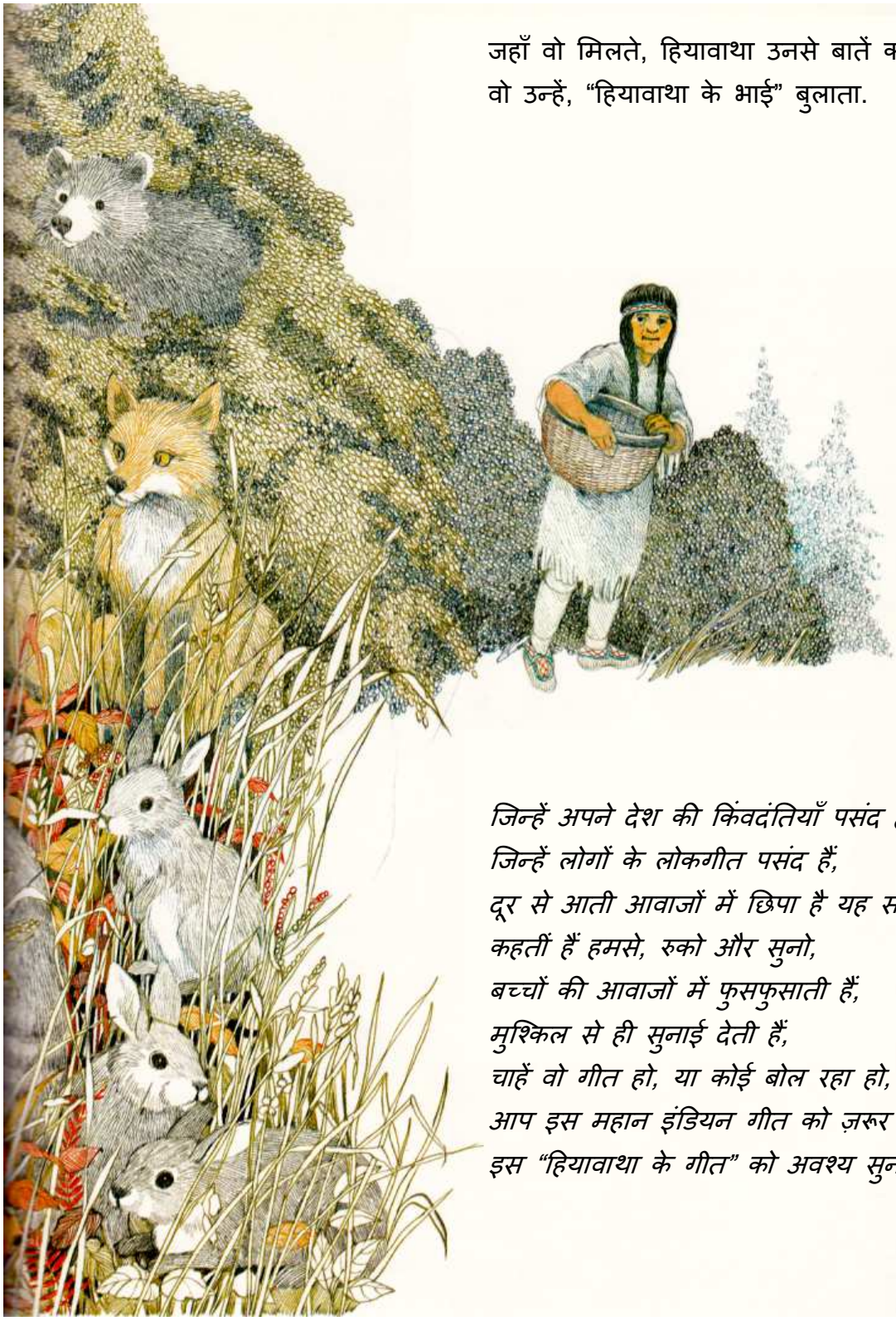

जहाँ वो मिलते, हियावाथा उनसे बातें करता,
वो उन्हें, "हियावाथा के भाई" बुलाता.

जिन्हें अपने देश की किंवदंतियाँ पसंद हैं,
जिन्हें लोगों के लोकगीत पसंद हैं,
दूर से आती आवाजों में छिपा है यह सन्देश,
कहतीं हैं हमसे, रुको और सुनो,
बच्चों की आवाजों में फुसफुसाती हैं,
मुश्किल से ही सुनाई देती हैं,
चाहें वो गीत हो, या कोई बोल रहा हो,
आप इस महान इंडियन गीत को ज़रूर सुनें,
इस "हियावाथा के गीत" को अवश्य सुनें.

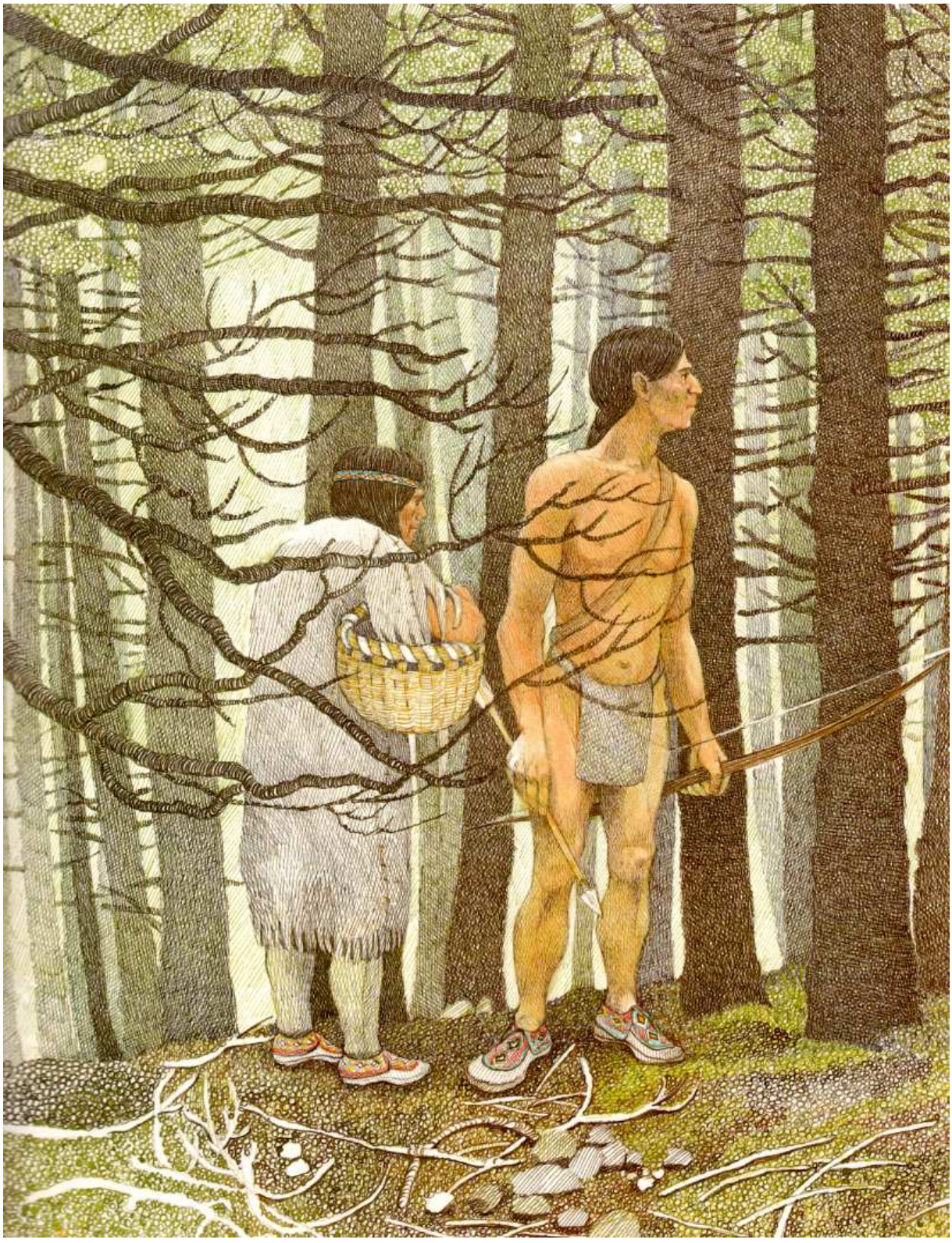

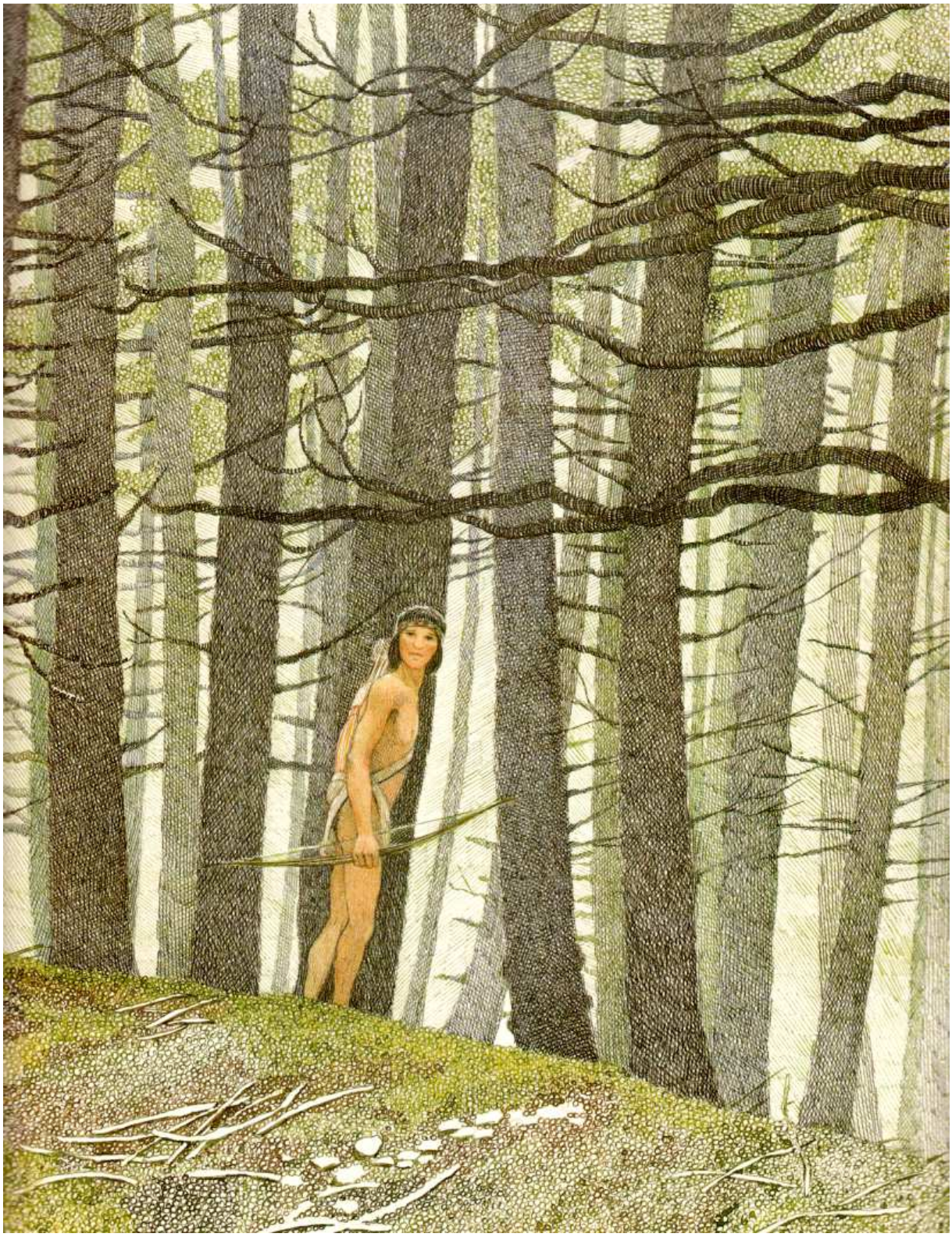

“हियावाथा का गीत”

लॉन्गफेलो लिखित “हियावाथा का गीत” एक क्लासिक का दर्ज़ा प्राप्त कर चुका है. 1855 में, जब वो पहली बार छपा तो उसकी बहुत वाहवाही हुई, और वो बेहद लोकप्रिय हुआ. इस गीत में लॉन्गफेलो ने अमरीकी मूल आदिवासियों की कहानियों, मान्यताओं, परम्परों को बेहद खूबसूरती और संवेदना से एक कविता में पिरोया है.